



चलने फिरने की आज़ादी वापिस आई *Freedom of movement Restored*

Author – Joyce D. Wethe Robertson
Chesterfield Missouri

The Christian Science Sentinel

Vol. 102, No. 06, Feb. 7, 2000

कुछ समय पहले मुझे घुटने में दर्द का उपचार मिला जिसने मेरा चलना लगभग असंभव बना दिया था। इस अनुभव से मैंने जो सबक सीखे उसने मुझे याद दिलाई कि क्रिश्चियन साँयस की खोजकर्ती मेरी बेकर एडी प्रार्थना द्वारा उपचार होने पर धन्यवाद की अभिव्यक्ति को कितना महत्व देती थी।

मैं रोज़ाना सुबह सैर पर जाती थी, जब एक दिन अचानक मैंने देखा कि मेरा दाँया घुटना दर्द करने लगा है। थोड़े दिन बाद जब मैं पास के कॉलेज में गर्मियों की क्लासें लगा रही थी कि दर्द काफी बढ़ गया। एक बार कुछ साल पहले भी मुझे कुछ ऐसा ही महसूस हुआ था और मैं इसे एक दम नकार कर ठीक कर पाई थी और इस शीघ्र उपचार के लिए काफी कृतज्ञ थी। मैंने मेरी बेकर एडी की पुस्तक साँयस एण्ड हैल्थ विद की टू द स्क्रिपचर्स पढ़ कर शारीरिक कष्ट के आध्यात्मिक उपचार के काफी नियम सीखे थे। खासकर यह मार्गदर्शन सहायक था “बीमारी के मत का उपचार इस तरह करो जिस तरह आप पाप के मत का करोगे, एकदम नकार कर। भौतिकता को ज्ञानी, अनुभवशील या शक्तिशाली मानने के प्रलोभन से इन्कार करो” (पृष्ठ 218)

पर इस केस में दर्द तथा बेचैनी जो चलने से थी, बढ़ती गई जब तक कि मेरे लिए वॉकर या डंडा लिए बिना चलना असंभव हो गया। मेरे पति मेरी बहुत सहायता करते थे और मेरा पूरा साथ देते थे। चाहे उपचार एकदम नहीं हुआ था, परन्तु एक क्रिश्चियन साँयस उपचारक, एक क्रिश्चियन साँयस नर्स तथा दोस्तों के प्रेमपूर्ण सहारे के साथ मैंने सारी क्लासें लगाई और मुझे अच्छा लगा।

ये कुछ बातें हैं जो मैंने इन दिनों सीखी कि “एकदम नकारना” मानवीय इच्छाशक्ति का काम नहीं है। परन्तु जिस तरह मेरे केस में था शारीरिक इन्द्रियों द्वारा प्रस्तुत चित्र को “एकदम नकारना” हर पल का काम था। मैंने यह भी सीखा कि दूसरी बार मैं असफल नहीं रही थी क्योंकि मैंने शीघ्र उपचार नहीं पाया था बल्कि मुझे कुछ गलत सोच को निकाल फैंकने का अवसर प्राप्त हुआ था। मुझे अपने ऊपर तरस खाने, शर्मिंदा होने और निराशा से निकलने की जरूरत थी।

** जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see <http://translations.christianscience.com>

प्रार्थना द्वारा मैं देख पाई कि एक और चीज़ जिसे जाना था वह था घमंड। कई बार मुझे ऐसी शारीरिक समस्याएं तथा उपचार प्राप्त हुए जिसे बाकी नहीं देख पाए क्योंकि समस्याएं दिखाई नहीं देती थी। इस बार समस्या साफ दिखाई देती थी। मैंने देखा कि मुझे क्रियाशील, सक्षम और मददगार होने का घमंड था, मैंने कभी अशक्त और दूसरों पर निर्भर महसूस नहीं किया था और इस विनम्र करने वाली स्थिति के प्रति मेरी बाधा को घमंड या इंसानी इच्छा से किसी श्रेष्ठ चीज़ के सहारे की जरूरत थी। इसे जरूरत थी आत्म-परख की, परमेश्वर में यकीन की, विनय की और सुनने की इच्छा की।

एक और चीज़ जो मुझे उस समय साफ दिखाई दी कि पहले जब कभी भी मैंने औरो को डंडे, वॉकर या व्हीलचेयर के साथ संघर्ष करते देखा था, तो मैं आत्मसंतुष्ट थी। मैं जीसस की आज्ञा का पालन नहीं कर रही थी, दूसरो को अपने समान प्रेम करने की। मुझे खुद को याद करवाने की जरूरत थी कि जीसस के सेवाकार्य का पहला सबक था “धन्य हैं वे, जो आत्मा में निर्धन हैं” (मत्ती 5:3)। जो मेरे लिए ज्यादा अच्छा नहीं था किसी के लिए भी ज्यादा अच्छा नहीं था।

कठिनाई को विषम बनाता हुआ भविष्य का डर था। दो हफ्तों से भी कम समय में हमें समुद्री पर्यटन पर जाना था और इस समय मना करना मुश्किल था बिना डॉक्टर के सर्टीफिकेट के कि मैं कम से कम कुछ समय के लिए तो अयोग्य हूँ। इसके बिना हमें उस यात्रा के कुल खर्च का एक बड़ा हिस्सा हरजाने में देना पड़ता। मैंने सायँस एंड हैल्थ का यह कथन याद किया, “घमंड तथा डर सत्य की कसौटी को सहने के लिए उपयुक्त नहीं है – – – (पृष्ठ 31) और जब इस आशंका के कारण कि मैं क्या करूँ, मैं अपने आप से तर्क वितर्क करने लगी तो मुझे मेरी बेकर एडी का एक और कथन याद आया जो लंगड़ेपन से संबंधित था, वह था “ दो विचारधाराओं के बीच रूके रहना” (Miscellaneous writing पृष्ठ 168)। मैंने फैसला किया कि सब बातों में परमेश्वर की इच्छा पूर्ण हो, यात्रा में भी और मैंने अपनी इच्छा को सहज भाव से जाने दिया, यह जानते हुए कि उसकी अनन्त बुद्धिमता में, सब ठीक हो जाएगा।

मैंने प्रार्थना जारी रखी और क्रिश्चियन सायँस उपचारक से भी मदद लेती रही। वह मुझे देखने आई और हमने प्रेमपूर्ण तथा सहायक बातें की। कुछ दिनों बाद ही मैंने महसूस किया कि मैं डंडे का प्रयोग करना भूल जाती थी, शायद उसकी बिल्कुल जरूरत नहीं थी। चाहे बिना दर्द के आजादी से चल पाना अद्भुत था परन्तु इस से भी ज्यादा कृतज्ञ मैं इन सब चीज़ों के मानसिक स्वभाव को समझ पाने के लिए और प्रार्थना द्वारा अपने शरीर का समन्वय लौटा पाने की अपनी परमेश्वर द्वारा प्रदान की गई क्षमता के लिए थी। मैंने सोचा कि शायद यही था जो जीसस चाहते थे जब वह अशक्त से पूछते थे कि क्या उसकी सम्पूर्ण होने की इच्छा है? मैंने भी यह पाया कि मुझे मुड़ कर उस वक्त को नहीं देखना चाहिए जब मैं जवान और ज़्यादा क्रियाशील थी। अतीत की ललक के साथ पीछे मुड़ कर देखना हमें आज की खुशी से वंचित कर सकता है और हमारी आगे की प्रगति को रोक सकता है।

मेरे पति और मैं योजित छुट्टी पर जा पाए और बहुत सी जगह हमें काफी चलना पड़ा। एक जगह तो मुझे 100 से भी ज्यादा सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ी और मैं हर कदम पर अपनी आजादी के लिए कृतज्ञ थी।

बहुत सालों से क्रिश्चियन सायेंस ने मेरी यह जानने में मदद की है कि परमेश्वर ही मेरा साथी है, मेरी शक्ति है, मेरा माता-पिता है।